# अध्याय - 3

## प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवाद : महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ

# अध्याय - 3

## प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवाद : महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ।

विशाल विश्व में सर्वत्र प्रकृति का बोलबाला है। कहा जाता है, मनुष्य प्रकृति का एक अंग है। प्रकृति के अन्य अंगों की भांति इसकी उत्पत्ति, विकास एवं विनाश की अवस्थाएँ भी हैं। अपनी इन्हीं अवस्थाओं के बीच मनुष्य प्रकृति को समझने - समझाने का प्रयत्न करता रहा है। 'कामायनी' में श्रद्धा के द्वारा प्रसाद ने कहा भी हैं कि -

**"एक तुम, यह विस्तृत भू-खंड, प्रकृति वैभव से भरा अमंद,**
**कर्म का भोग, भोग का कर्म, यही जड़ का चेतन - आनंद।"**[1]

अर्थात कर्म से ही मनुष्य जड़ प्रकृति में चेतन रूपी आनंद का भोग करता है। विदित है कि संसार का कोई भी रचनाकार ऐसा नहीं है जिसने अपनी रचनाओं में प्रकृति का प्रयोग न किया हो।

प्रकृति विविध रूपिणी होती हैं। कभी मनुष्य उसे प्रेयसी के रूप में तो कभी जननी के रूप में, कभी उपद्रेष्टा के रूप में, कभी आलंबन तो कभी उद्दीपन के रूप में और कभी तो वह अकिंचन बनकर प्रकृति के रहस्य को मूक द्रष्टा के रूप में देखता रहा हैं। कभी प्रकृति साध्य बनकर आई है तो कभी साधक फिर कभी प्रकृति में ही मनुष्य, मानवीय क्रिया कलापों के दर्शन भी करता रहा हैं। कभी प्रकृति मानव की सहचरी रही है, तो कभी उसके लिए प्रेरणादायी का काम भी करती रही है। सुख, दुःख, हर्ष, विषाद, संघर्ष, हर क्षेत्र में प्रकृति की भूमिका का उसे एहसास रहा है। प्रकृति की शक्ति और सौन्दर्य के साथ मनुष्य की संवेदना का घनिष्ठ संबंध रहा है। इसलिए हम इसके उपासक

बन जाते है और हमें अनेक रूपों में इस महाशक्ति के आगे समर्पित होना पड़ता है, यहाँ तक कि हम इसमें विलीन हो जाना चाहते है।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद त्रस्त संसार में मनुष्य ने पुनः प्रकृति की गोद में जाने का प्रयास किया। अर्थात् छायावादी काव्यों में प्रकृति सिर्फ साधन नहीं साध्य बनकर आई महादेवी वर्मा इसके अपवाद नहीं है। प्रकृति की भूमिका हर भाषा की रचनाओं में बराबर रूप में स्वीकृत रही है। क्योंकि मूल रूप में मनुष्य, मनुष्य है और प्रकृति, प्रकृति है। दो हाथ, दो कान, दो आँख, एक नाक वाला मनुष्य सर्वत्र विद्यमान हैं। पेड़- पौधे, जंगल, पहाड़, झरना, बादल, नदी, निर्झर, समंदर, सूर्योदय, सूर्यास्त सर्वत्र समान हैं। अतः भाषा का काव्य इससे विरत कैसे हो सकता है। गहराई से देखेंगे तो पायेंगे कि रवीन्द्रनाथ के रग - रग में प्रकृति बसी हुई थी। या यों कहिये, उनकी काव्य प्रतिभा प्रकृति के संस्पर्श में आकर मुखर हो उठी और विश्व के काव्य आकाश में रवि को रवीन्द्र के रूप में स्थापित कर दिया| वस्तुतः प्रकृति प्रयवेक्षण ने रवीन्द्र को कवीन्द्र बनाया। बंग्ला के कवि को विश्व दरबार में श्रेष्ठ आसन्न प्रदान किया। कहने का तात्पर्य स्पष्ट है, महादेवी एवं रवीन्द्रनाथ दोनों अपनी सृजनशीलता में प्रकृति के लिए, प्रकृति के द्वारा पैदा हुए थे| इनकी सृजनशील प्रतिभा की लीला का विस्तार प्रकृति में ही हुआ हैं। कभी - कभार ऐसा भी लगता हैं कि, प्रकृति की साधना को ही इन्होंने जीवन का चरम और परम लक्ष्य मान लिया एवं प्रकृति ही दोनों के लिए श्रेय और प्रेय रही हैं। प्रकृति चित्रण में दोनों की काव्य प्रतिभा सार्थक एवं चरितार्थ होती रही हैं । जिसकी विशद् चर्चा अपेक्षित है -

(1) महादेवी वर्मा के प्रकृति संबंधी रचनाएँ

(2) रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रकृति संबंधी रचनाएँ।

**<u>महादेवी वर्मा के प्रकृति संबंधी रचनाएँ -</u>** छायावादी कवि प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षक के रूप में प्रसिद्ध रहें है। महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति का बहुत

सूक्ष्म चित्रण देखने को मिलता है| उनका प्रकृति से बहुत गहरा लगाव रहा है। 'नीलाम्बरा' की भूमिका में उनका कहना हैं कि, "प्रकृति मानव के करण अर्थात् इंद्रियों द्वारा प्राप्त रूप - रस - गंध - स्पर्श - ध्वनि का विषय भी है और उस उपलब्धि से उत्पन्न अनुमान, कल्पना, आस्था, विचार, सौन्दर्यबोध, जिज्ञासा आदि का कारण भी। मनुष्य चेतना की विविध वृत्तियों के अनुसार उसकी दृष्टि प्रकृति के संबंध में भी विविध हो गई हैं। कभी उसकी दृष्टि विषयपरक है, कभी देवत्व और रहस्यमूलक।"[2] अर्थात उन्होंने दर्शन की जगह काव्य की विषय विस्तु के लिए प्रकृति को ही प्रमुख साधन माना है तथा अपनी अनुभूतियों को प्रकृति चित्रों के माध्यम से मूर्त - रूप दिया हैं । महादेवी के अनुसार छायावादी कवि प्रकृति में अपने ही ह्रदय के सौन्दर्य का प्रतिबिम्ब देखता हैं। वह सांध्यगीत (1936) के सचित्र संस्कण की भूमिका 'अपने विषय में', स्वयं कहती हैं कि, "छायावाद ने मनुष्य के ह्रदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिए जो प्राचीनकाल से बिम्ब - प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी।"[3]

**<u>आलंबन रूप -</u>** महादेवी ने प्रकृति को शुद्ध आलंबन रूप में कम ही चित्रित किया है। उनके अधिकांश प्रकृति चित्र, उनके भावों का ही प्रतिबिम्ब है। प्रकृति के संश्लिष्ट रूप में महादेवी, अपनी कविता में जिस किसी भी प्राकृतिक उपकरण, वातावरण या स्थिति का वर्णन करती हैं , वह वर्णन अपने आप में पूर्ण होता है । उसे पढ़कर ही पाठक के सामने एक चित्र सा कल्पना में उतर आता है। रश्मि कविता संग्रह से एक उदाहरण-

**"चुभते ही तेरा अरुण वाण !/ बहते कन-कन से फूट-फूट,**
**मधु के निर्झर से सजल गान।/ इन कनक रश्मियों में अथाह**
**लेता हिलोर तम सिन्धु जाग ;/ बुद्बुद् से वह चलते अपार,**

**उसमें विहंगों के मधुर राग ;/ बनती प्रवाल का मृदुल कूल,**

**जो क्षितिज रेख थी कुहर-म्लान।"[4]**

**( रश्मि, गीत संख्या - 1 )**

प्रस्तुत पंक्तियों में अरुण की प्रथम किरण के स्फुटन के दृश्य का चित्रण संश्लिष्ट रूप में प्रस्तुत हुआ है। कनक, रश्मियों की आभा, मधुर, कोलाहल, बादलों की रागिनी, खगकुल का कलरव, कलियों का हास और अलियों का राग आदि सब मिलकर वातावरण में सजीवता, सम्पूर्णता और वैचित्र्य उत्पन्न कर जहाँ एक ओर चित्रकला के अधिक समीप ले जाते है वहीं दूसरी ओर महादेवी अपनी सतरंगी कल्पना से प्रभातकालीन घटा के गत्यात्मक सौन्दर्य का मनोरम चित्र पूरे आत्मदान के साथ उकेरती हैं।

अरुण की प्रथम किरण की ही भांति 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' शीर्षक कविता में बसंत रजनी रूपी प्रेमिका अपने प्रेमी से मिलने के लिए क्षितिज से धीरे-धीरे उतर रही हैं। कवयित्री ने उसकी साज- सज्जा में आभूषण के प्रयोग का बड़ा ही सुन्दर चित्र खीचा है। उसके वेणु ताराओं से सज्जे हुए हैं , कानों में चन्द्रमा रूपी शीशफुल लटक रहे हैं। उसने किरणों सा सुन्दर चूड़ी पहन रखा है। ऐसा लग रहा है कि उसका मुख, सफ़ेद बादलों की ओट में घूँघट की तरह छिपा है। उसके पथ में मोती बिखरे है और वह अपने प्रेमी से मिलने जा रही है। 'नीरजा' काव्य संग्रह की दूसरी कविता 'धीरे- धीरे उतर क्षितिज से' में देखिये। उदाहरण दृष्टव्य हैं-

**"धीरे-धीरे उतर क्षितिज से / आ बसंत-रजनी !**

**तारकमय नव वेणीबंधन, / शीश-फूलकर शशि का नूतन ;**

**रश्मि-वलय सित घन- अवगुण्ठन,/मुक्ताहल अभिराम बिछा दे**

**चतवन से अपनी ! / पुलकित आ वसंत-रजनी !"[5]**

**(नीरजा , गीत संख्या - 2)**

महादेवी के काव्य में प्रकृति का रम्य रूप भी देखने को मिलता है| कवयित्री के कवि ह्रदय का बाह्य संसार जब विरक्त होता है तो उनके अंतरतम का अदृश्य जगत साकार हो उठता है। उसी रहस्य जगत की अभियक्ति के लिए महादेवी के पास रम्य और व्यापक प्रकृति से ही उपमान जुटाकर, अपनी जीवन की प्रत्यक्ष और परोक्ष अनुभूतियों को शब्दावरण का देती है। 'सांध्यगीत' में संकलित 'झिलमिलाती रात मेरी' शीर्षक कविता में महादेवी ने रात का कितना सजीव और प्रभावोत्पादक चित्र प्रस्तुत किया हैं, वह देखते ही बनता है । उदाहरण दृष्टव्य हैं -

**"झिलमिलाती रात मेरी !**
**साँझ के अंतिम सुनहले / हास सी चुपचाप आकर,**
**मूक चितवन की विभा - / तेरी अचानक छू गई भर ;**
**बन गई दीपावली तब आंसुओं की पाँत मेरी।"[6]**

**(सांध्यगीत, गीत संख्या - 24)**

महादेवी की रचना में प्रकृति का आलंबन रूप, कम देखने को मिलता है । उनकी रचना में प्रभात, रजनी, बादल, हिमगिरी, आदि के आलम्बंगत संश्लिष्ट चित्र ही अधिक देखने को मिलते हैं । इन चित्रों में कवयित्री की दृष्टि अन्य छायावादी कवियों की भांति वस्तु-मुखी नहीं वरन् विरह की साधना यानि रहस्य को व्यंजित करती हैं ।

**<u>उद्दीपन रूप -</u>** प्रकृति में उद्दीपन की परम्परा प्राचीन है। देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार, " जिन कारणों से भाव में उपचय होता है, उन्हें उद्दीपन कहते हैं। उद्दीपन का अर्थ है उद्दीप्त करने वाला, बढ़ाने वाला।"[7] अर्थात उद्दीपन का सामान्य अर्थ हुआ - जगाना या प्रज्जलित करना। रस सिद्धांत के अनुसार किसी भाव के उद्दीपन के लिए आलंबन के अतिरिक्त अनुकूल परिस्थितियों का होना आवश्यक होता है। उद्दीपन रूप में प्रकृति को काव्य के संयोग और वियोग

दोनों पक्षों में वर्णित किया गया हैं । संयोग में मलय-समीर, शीतल-चन्द्रिका आदि पारस्परिक आकर्षण को बढ़ाते है, किन्तु वियोग में प्रकृति की समस्त चेष्टाएँ विरही जनों को उन्मत्त एवं विक्षुब्ध कर देती है। पूर्ववर्ती काव्यों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि, अधिकांशतः प्रेम में वियोग पक्ष के अंतर्गत प्रकृति के उद्दीपन रूप का वर्णन है। छायावादी कवियों पर भी यह बात लागू होती हैं । प्रकृति का उद्दीपन में किया गया चित्र तो महादेवी के काव्य में सघनता से देखा जा सकता हैं । महादेवी की कविता में प्रकृति का उद्दीपन रूप दृष्टिगोचर होता है। प्रायः उन्होंने अपनी निजी अनुभूतियों एवं भावना को अभिव्यक्ति देने के क्रम में प्रकृति के सूक्ष्म तथा रहस्यात्मक पक्ष का सहारा लिया है। उदाहरण दृष्टव्य हैं -

**"निशा को धो देता राकेश / चाँदनी में जब अलकें खोल,**
**कली से कहता था मधुमास / बता दो मधु मदिरा का मोल,**
**झटक जाता था पागल वात / धूलि में तुहिन कणों के हार,**
**सिखाने जीवन का संगीत / तभी तुम आये थे इस पार।"[8]**

**(नीहार , गीत संख्या - 1)**

कवयित्री का अलौकिक प्रियतम से साक्षात्कार किन परिस्थितियों में हुआ, इसका परिचय वे प्रकृति के माध्यम से दे रही है। निशा को जब चाँद अपने आलिंगन में समेट लेता है तथा कली के जीवन में बसंत का आगमन हो जाता है, उसी मधुर क्षण में कोई पागल पवन कवयित्री के अश्रुओं के हार को झटक कर धूल में मिला देता है। इसी क्षण कवयित्री के अलौकिक प्रियतम का आगमन उन्हें जीवन रूपी संगीत को सिखाने आते है। प्रस्तुत पंक्तियों में कली, बसंत, और पवन के क्रिया कलापों के माध्यम से महादेवी, परिस्थितियों और मनःस्थिति के साथ जीवन रूपी संगीत सिखाने वाले रहस्यमयी प्रियतम का संकेत भर दे रहीं हैं।

दुख, निराशा, विरह, त्याग, सहिष्णुता वैसे तो महादेवी के जीवन में बौद्ध धर्म से आये लेकिन प्रेरणा प्रकृति से मिली। दुख के सुखद अहसास की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से, गूढ रहस्य का सहारा लेकर कहती है। सांध्यगीत में संकलित 'तब क्षण क्षण मधु-प्याले होंगे !' शीर्षक कविता में देखा जा सकता हैं -

**"अपना आकुल मन बहलाने / सुख-दुख के खग पाले होंगे !**
**जब मेरे शूलों पर शत शत, / मधु के युग होंगे अवलंबित,**
**मेरे क्रंदन से आतप के - / दिन सावन हरियाले होंगे !"[9]**

**(सांध्यगीत , गीत संख्या - 36)**

प्रकृति महादेवी के व्यक्तित्व से एकाकार हो गई है या महादेवी, कहना मुश्किल है। प्रकृति से किया गया तादातम्य उनके अनेक गीतों में उद्दीप्त हुआ हैं। संध्या का आकाश ही कवयित्री का जीवन हैं, धूमिल क्षितिज वैराग्य और लालिमायुक्त सूर्य कवयित्री का सुहाग हैं, रंग-बिरंगे बादल स्मृतिमय स्वप्न हैं, गगन अंधकार उमड़ता हुआ विषाद और संध्या के आकाश से मूक मिलन उनकी अश्रुपूर्ण दृष्टि है। इस प्रकार 'सांध्यगीत' में जीवन की छाया ही प्रतिबिंबित हुई है। 'मै नीर भरी दुख की बदली', 'मै बनी मधुमास अली', 'विरह का जलजात जीवन', 'रात की नीरव व्यथा', 'तम सी अगम तेरी कहानी' आदि गीतों में भी प्रकृति के साथ तादात्म्य का भाव व्यक्त हुआ हैं। संध्या तो सुन्दर और रसवंती हैं, कवयित्री की सहचरी हैं। कहीं-कहीं तो प्रकृति से तादात्म्य के प्रयास में विरोधी भावों का भी सहारा लिया गया है। वे अपनी अभावहीनता का परिचय देती हुई कहती हैं। उदाहरण, 'नीरजा' काव्य संग्रह की कविता 'जग करुण करुण, मै मधुर मधुर' में देखा जा सकता है -

**"जग करुण करुण, मैं मधुर मधुर !**
**दोनों मिलकर देते रजकण**

**चिर करुण - मधुर सुंदर सुंदर !"**[10]

**(नीरजा , गीत संख्या - 45)**

अपनी अनुभूतियों को रहस्यमय बनाकर प्रकृति के रंग में रंगने में जितनी सिद्धस्त हैं महादेवी शायद ही कोई अन्य कवि हो। वे प्रकृति को अपने अनुकूल बना लेती हैं । उनके काव्य में ऐसे रहस्यमय प्राकृतिक चित्र प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं जो भावों को उद्दीप्त करने की पूर्ण क्षमता रखते है । महादेवी ने प्रकृति के भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों का ही श्रृंगार किया हैं । इस प्रकार महादेवी में प्रकृति अभिव्यक्ति के साथ अनुभूति का भी विषय बनती गई। यह प्रकृति कवयित्री के जीवन से ही नहीं वरन् उनके मूल दर्शन से भी सम्बद्ध है। उन्होंने प्रकृति के कोमल, मधुर और सुन्दर रूप का चित्रण रहस्यमय ढंग से ही अधिक किया है।

**<u>प्रकृति का मानवीय रूप -</u>** प्रकृति पर चेतन व्यक्तित्व का आरोप ही मानवीकरण है। वस्तुतः यह मानवीय भावनाओं की पृष्ठभूमि का आधार स्तम्भ हैं । यद्यपि साहित्य का मुख्य विषय ही मानव है लेकिन प्रकृति के सहयोग के बिना मानव की चेष्टाओं और उसकी मनोदशाओं की अभिव्यक्ति भाव-विहीन और नीरस सी प्रतीत होती है । किरण कुमारी गुप्ता के अनुसार, "आरम्भ में प्रकृति मानव की सहजवृत्तियों का समाधान करती है और अव्यक्त रूप में मानव का उसके साथ संबंध स्थापित हो जाता है। उसके साहचर्य में मानव कभी उसके अंग-प्रत्यंगों की बनावट के विषय में विचार करता और कभी उसके स्वाभाविक सौन्दर्य पर मुग्ध होकर चकित सा देखता रह जाता है। प्रकृति के उपयोगी और विश्लेषणात्मक रूप पर विचार करने वाला मानव वैज्ञानिक है और सौन्दर्य पर सुधिबुधि खोने वाला मानव है भावुक कवि।"[11]

महादेवी रहस्य की साधिका हैं। उन्होंने अपने अज्ञात प्रियतम का दर्शन, मिलन आदि प्रकृति के माध्यम से ही किया है। प्रकृति महादेवी की

रहस्यवादी भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ अनुभूति का भी विषय बनती गयी। महादेवी प्रकृति में मानवीय गुणों और क्रियाओं का आरोपण कर अपने अलौकिक प्रियतम के प्रेम का अनुभव करती है। उदाहरण अवलोकनीय हैं –

**''सुरभि बन तो थपकियाँ देता मुझे,**
**नींद के उच्छवास सा, वह कौन है?''**[12]
**(रश्मि , गीत संख्या - 8)**

उन्होंने प्रकृति के साथ गहन रागात्मक संबंध स्थापित करते हुए प्रकृति पर नारी भावनाओं का आरोपण किया तो कहीं उसके माध्यम से अपने अज्ञात प्रियतम का दर्शन किया। 'नीरजा' की निम्नलिखित पंक्तियों में कवयित्री अपने प्रिय का दर्शन इस रूप में करती हैं –

**''रूपसि तेरा धन-केश पाश !**
**श्यामल श्यामल कोमल-कोमल**
**लहराता सुरभित केश-पाश !''**[13] **(नीरजा , गीत संख्या - 11)**

प्रकृति पर मानवीय भावों का आरोपण छायावादी कवियों का वैशिष्ट्य रहा हैं। प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी स्वभावतः कल्पनाशील रहे हैं। वे यथार्थ की असुन्दरता की अपेक्षा प्रकृति की रंगीनी को अधिक पसंद करते है। प्रकृति के प्रति महादेवी का एप्रोच बहुआयामी है। वे कभी प्रकृति के साथ प्रणय संबंध जोड़ती है तो कभी और कहीं अभिसारिका नायिका बन जाती है। कभी मित्र तो कभी उपदेष्टा के रूप में साक्षात्कार करती है , जिसे देखकर यह आभास होता है कि, रहस्यवादी साधिका अपने अलौकिक प्रियतम के साथ कई रूपों में संबंध स्थापित करती हैं। उदाहरण दृष्टव्य हैं –

- **''श्रृंगार कर ले री सजनि''**[14] (नीरजा, गीत संख्या - 6)
- **''रश्मि बन तुम आए चुपचाप,**

**सिखाने अपने मधुमय गान।''**[15] (रश्मि, गीत संख्या - 21)

- **''तुम विद्युत बन, आओ पाहुन!**
  **मेरी पलकों में पग धर-धर**
  **आज नयन आते क्यों भर-भर।''**[16](नीरजा, गीत संख्या - 3)

रहस्यवादी साधक का यह वैशिष्ट्य है कि, वह उस परम सत्ता का दर्शन प्रकृति के कण-कण में करता हैं। महादेवी रहस्य की साधिका हैं। अतः वह अपने अलौकिक प्रियतम के दर्शन प्रकृति के माध्यम से करती है। उनकी रहस्यवादी कविताओं में प्रकृति-चित्रण के प्रायः रूपों में प्रकृति मानवीय रूप में ही आयी है।

**<u>संवेदनात्मक रूप –</u>** प्रकृति के संवेदनात्मक रूप का अर्थ, उस प्रकृति वर्णन से है जहाँ प्रकृति मानवों की गहन वेदना को देखकर उसके दुःख में सहभागी बनती है और मानवों के हर्ष-उल्लास में अधिक प्रफुल्लित दिखलाई पड़ती है। महादेवी के काव्य में ऐसे चित्रणों की भरमार हैं। उदाहरण दृष्टव्य हैं –

- **''साँस के अंतिम सुनहले**
  **हास सी चुपचाप आकर,**
  **मूक चितवन की विभा –**
  **तेरी अचानक छू गई भर;**
  **बन गई दीपावल तब आँसुओं की पाँत मेरी।''**[17]
  (सांध्यगीत, गीत संख्या - 24)
- **''मेरे हँसते अधर नहीं जग –**
  **की आँसू-लड़ियाँ देखो !**
  **मेरे गीले पलक छुओ मत**
  **मुर्झाई कलियाँ देखो !''**[18]
  (नीरजा, गीत संख्या - 17)

कवयित्री का अलौकिक प्रियतम से परिचय किन परिस्थितियों में हुआ, इसका परिचय वे प्रकृति का सहारा लेकर देती है। साँस के अंतिम सुनहले किरण का स्पर्श और मुरझाई कलियों के क्रिया-व्यापारों के माध्यम से महादेवी अपनी परिस्थिति और मनःस्थिति का संकेत भर दे रही है। दुःख, निराशा, विरह, त्याग, सहिष्णुता वैसे तो महादेवी के जीवन में बौद्ध धर्म से आये लेकिन प्रेरणा प्रकृति से मिली। दुःख के सुखद अहसास की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से गूढ रहस्य का सहारा लेकर करती है। महादेवी के अनुसार, छायावादी कवि प्रकृति में अपने ही हृदय के सौन्दर्य का प्रतिबिम्ब देखता है। वे 'सांध्यगीत' (1936) के सचित्र संस्करण की भूमिका 'अपने विषय में' वे स्वयं कहती हैं कि, ''छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब-प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलिकत जान पड़ती थी।''[19] महादेवी के काव्य में प्रकृति के माध्यम से उनके संवेदनात्मक रहस्यवादी भावों की बिम्ब-प्रतिबिम्ब स्थिति दिखाई पड़ती हैं।

**<u>अलौकिक सत्ता का स्वरूप –</u>** महादेवी वर्मा का साध्य परम पुरुष निराकार ब्रह्म हैं। साधिका स्वयं आत्मतत्त्व हैं। वे अपने प्रियतम को प्रकृति के मध्य से अलौकिक रूप में देखती है। उन्हें लगता हैं कि, जब सारी दुनिया विश्राम करती रहती है तब भी उनका प्रिय तारकों के बीच जागता रहता है। रहस्यवादी साधक की यह विशेषता होती हैं कि, वह प्रकृति के कण-कण में अपने अलौकिक सत्ता का ही दर्शन करता है। उदाहरण अवलोकनीय हैं –

**''सो रहा है विश्व, पर प्रिय तारकों में जागता है !**
**नियति बन कुशली चितेरा –**
**रंग गई सुख दुःख रंगों से**
**मृदुल जीवन-पात्र मेरा !''[20]**

(सांध्यगीत, गीत संख्या -19)

कवयित्री के मन में उत्कट अभिलाषा हैं कि, वह अपने प्रिय का चित्र बना ले। सुधियों की बिजली-सी तुलिका लेकर मोम के समान हृदय की ज्वाला कण को आँसुओं में घोलकर वह अपने प्रिय का चित्र बनाना चाहती है। कवयित्री का प्रिय अलौकिक हैं इसलिए उस अलौकिक प्रियतम के चित्र भी रहस्यात्मक ढंग से बनाती है। 'दीपशिखा' के गीत संख्या 40 में इस उदाहरण को देखा जा सकता हैं –

**''प्रिय मैं जो चित्र बना पाती**

**X X X**

**सुधि – विद्युत की तुली लेकर**
**मृदु मोम फलक-सा उर उन्मन,**
**मैं घोल अश्रु में ज्वाला-कण,**
**चिर मुक्त तुम्हीं को जीवन के**
**बंधन हित विकल दिखा जाती !''**[21]

**(दीपशिखा , गीत संख्या - 40 )**

चूँकि कवयित्री का प्रिय अशरीरी और अनक्षित है, इसलिए वह कभी सम्पूर्ण सृष्टि में दिखाई पड़ता है और कभी हृदय में लक्षित होता है। महादेवी कहती हैं कि वह प्रिय तो मेरे अन्दर हैं , फिर उससे मेरा परिचय क्या? तारकों में जैसे विद्युत है और प्राणों में स्मृति है, उसी तरह पलकों में नीरव पद की गति है। छोटे से हृदय में पुलक-सा संसार समाया हुआ है। उदाहरण दृष्टव्य हैं –

**''तुम मुझ में प्रिय ! फिर परिचय क्या !**
**तारक में छवि प्राणों में स्मृति**
**पलकों में नीरव पद की गति,**
**वधु उर में पुलकों की संसृति।''**[22]

(नीरजा, गीत संख्या - 12)

इन पंक्तियों में अद्वैतभाव की सृष्टि होता है। ब्रह्म और जीव दोनों एक हैं। इस जीव के अन्तस में ब्रह्म समाया हुआ हैं। इस गूढ रहस्य को महादेवी ने बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रकृति के माध्यम से चित्रित किया है। अतः महादेवी वर्मा के प्रायः सभी गीत-संग्रहों में उनके प्रिय का अशरीरी, विश्वव्यापी, अलक्षित स्वरूप उनके प्रकृति चित्रण में उभरता हैं। वह प्रिय परम सौन्दर्यवान हैं। सृष्टि के एक-एक कण में समाया हुआ हैं।

**<u>रवीन्द्रनाथ के प्रकृति संबंधी रचनाएँ –</u>** रवीन्द्रनाथ के काव्य का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि, 'प्रकृति' उनके काव्य चेतना की विराट उपासना है। कवि रवीन्द्र की प्रसिद्धि मानवतावादी कवि के रूप में रही है, जो उनकी ख्याति का आधार भी है, लेकिन इस गहन मानवीय-संवेदना के पीछे प्रकृति का अलौकिक स्वरूप विराजमान है। प्रकृति के मनोरम वातावरण में उनके आंतरिक-भावों का उन्नयन हुआ हैं और साथ ही उनकी रचनात्मक शक्ति की भावपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने सौन्दर्य की भावभूमि पर प्रकृति की सुक्षमता का बोध करते हुए विपुल काव्य का सृजन किया साथ ही प्रकृति के रहस्यात्मक तत्वों की खोज की। उन्होंने न केवल प्रकृति के बाहरी सौंदर्य को चित्रिति किया अपितु अपनी अन्तर्दृष्टि के द्वारा उसके आंतरिक सौन्दर्य जो रहस्यमय चेतना से जुड़ा हुआ है उसे भी आत्मीयता से अनुभव किया। रवीन्द्रनाथ लिखते हैं - ''प्रकृति में जो एक गंभीर आनंद पाया जाता है, वह इसलिए कि उसके साथ हम एक निगूढ आत्मीयता का अनुभव करते हैं। तृष्णा, गुल्मलता, जलधारा, वायुप्रवाह, छायालोक के आवर्तन, ज्योतिष्कदल के प्रवाह, पृथ्वी के अनंत प्राणी पर्याय के साथ हमारी नाड़ी की धड़कनों का योग है। विश्व के साथ हम एक ही छंद में बंधे हुए है। इस छंद में जहाँ भी यति पड़ती है वहाँ झंकार उठती है। वहाँ हमारे मन के भीतर से संवेदनशीलता प्रकट होती है।''[23]

**<u>आलंबन रूप –</u>** आलंबन का अर्थ है, वह अवलंब या आधार जिस पर भाव टिका या जिससे भाव जगा, वह उसका आधार या आलंबन होगा। आलंबन रूप के अन्तर्गत, प्रकृति कवि के लिए साधन न बनकर साध्य बन जाती है। कवि का मन प्रकृति-दर्शन में रमकर आत्म विभोर हो उठता है। 'विदाय-अभिशाप' शीर्षक कविता में रवीन्द्र को प्रकृति मनुष्य के सुख-दुःख के बीच दिखाई पड़ता है। इसमें कच-देवयानी का प्रेम प्रकृति की श्यामल भूमि के बीच विकसित होता है। कच विदा लेकर जा रहा है। देवयानी उसका हृदय टटोलती है। अपने दुःख को प्रकृति के द्वारा व्यक्त करती है। उदाहरण दृष्टव्य हैं –

**''कत उषा, कत ज्योत्सना, कत अंधकार**
**पुष्पगंध घन अमानिशा एइ वने**
**गेछे मिशे सुखे दुखे तोमार जीवने।''**[24]

प्रकृति के इस मनोरम वातावरण में कितने भाव उद्दीप्त होते हैं और कितनी स्मृतियाँ शेष रह जाती हैं । इसी रहस्य का उद्घाटन कवि रवीन्द्र प्रकृति के माध्यम से करते हैं।

मानवीय जीवन के यथार्थ को प्राकृतिक परिवेश के साथ जोड़कर उन्होंने जिस सौन्दर्य की सृष्टि की हैं , वह सत्य और शिव का समतुल्य संतुलन है। प्रकृति के कण-कण में उस रहस्यमयी सत्ता से उनका आत्म साक्षात्कार हुआ है। उनका विश्वास था ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया दैवी सत्ता से चालित है। यह विश्व परमात्मा की लीला हैं । आंधी-पानी, सूर्य-चन्द्र, तारे, दिन-रात, पेड़-पौधे, पर्वत-पवन सब कुछ ईश्वरीय आनन्द का विधान हैं । इसलिए उनकी दृष्टि में प्रकृति भौतिक और जड़ शक्तियों का संयोजन मात्र नहीं है। प्रकृति के माध्यम से रवीन्द्रनाथ ईश्वरीय अनुभूति को अनुभव करते है | वे 'मानसी' काव्य-संग्रह की 'निष्फल कामना' कविता में इस अनुभूति को अभिव्यक्त करते है। उदाहरण देखें –

**''खूँजितेछि कोथा तुमि,**

**कोथा तुमि !**

**जे अमृत लुकानो तोमाय**

**से कोथाय !**

**अन्धकार सन्ध्यार आकाशे**

**विजन तारार माझे काँपिछे जेमन**

**स्वर्गेर आलोकमय रहस्य असीम,**

**उहे नयनेर**

**निविड़ तिमिरले काँपिछे तेमनि**

**आत्मार रहस्यशिखा।''[25]**

**(निष्फल कामना , मानसी काव्य संग्रह में)**

प्रकृति के आलंबन रूप के अन्तर्गत कविगुरू रवीन्द्र ने मानवीय भावों को प्राकृतिक परिवेश के आधार पर चित्रित किया है। आलंबन रूप में प्रकृति एक मनुष्य की भाँति जीवन के सुख-दुःख में हँसती है तो कभी रोती हुई प्रतीत होती है और कभी उस असीम से विरह की अनुभूति कर उससे अद्वैत की इच्छा में प्रकृति के कण - कण में खोजती हैं |

**<u>उद्दीपन रूप –</u>** उद्दीपन का सामान्य अर्थ है – उद्दीप्त करनेवाला, बढ़ाने वाला। जिन कारणों से भाव में उपचय होता है, उसे उद्दीपन कहते है। उद्दीपन रूप में प्रकृति को काव्य के संयोग और वियोग दोनों पक्षों में वर्णित किया गया है। संयोग में मलय-समीर, शीतल-चन्द्रिका आदि पारस्परिक आकर्षण को बढ़ाते है, किन्तु वियोग में प्रकृति की समस्त चेष्टाएँ विरही जनों को उन्मत्त एवं विक्षुब्ध कर देती है । संयोगावस्था में सुख और आनंद प्रदान करने वाली प्राकृतिक वस्तुएँ वियोगावस्था में पीड़ादायक बन जाती है। जिन स्थलों में नायक-नायिका ने विहार किया था, जहाँ जीवन के सुखमय दिन व्यतीत किये थे, वह प्रिय से

बिछुड़ने पर विरह-व्यथा को उद्दीप्त करती है। मनुष्य अपनी मनःस्थिति के अनुसार प्रकृति में हर्ष और रूदन का अनुभव करता है।

कवि गुरू रवीन्द्र के प्रकृति प्रेम में भावों को उद्दीप्त करने वाले प्राकृतिक-उपादानों का उत्कृष्ट प्रयोग देखने को मिलता हैं। 'सोनार तरी' काव्य संग्रह के 'व्यर्थ यौवन' शीर्षक कविता में कवि ने रात्रि की निस्तब्धता में प्रेयसी की विरह-व्यथा का सफल अंकन किया है। उदाहरण अवलोकनीय हैं –

**''आजि जे रजनी जाय फिराईबो ताय केमने !**
**केन नयनेर जल झरिछे विफल नयने।**
**एइ वेशभूषण लहो सखी, लहो**
**एइ कुसुममाला हयेछे असह,**
**एमन जामिनी काटिल विरहशयने।''[26]**

**(व्यर्थ यौवन, सोनार तरी काव्य संग्रह में)**

रहस्यवादी साधक के लिए अपने ब्रह्म से विरह की स्थिति असहनीय होती है। कवि कहते हैं, आज यह रजनी जा रही है, इसे मैं कैसे वापस लाऊँ, क्यों अश्रु की धारा बह रही है इस विकल नयन से, यह वेशभूषा की सजावट को हे सखी तुम ले लो, यह फूलों की माला असहनीय है। किस प्रकार विरहावस्था में रात्रि की बेला कटी है। यहाँ रात्रि की शांत प्रकृति साधक के भावों को अपने अराध्य से मिलने के लिए उद्दीप्त करती है। 'मानव' गीतांजलि काव्य संग्रह के गीत संख्या 55 में कवि ने प्रकृति के अंचल में मानवीय भावों को उद्दीप्त कर वाणी प्रदान की हैं –

**''अति निविड़ वेदना वनमाझे रे**
**आजि पल्लवे पल्लवे बाजे रे।''[27]**

**( गीतांजलि , गीत संख्या -55 )**

विश्व की संपूर्ण प्रकृति से प्रेम करने वाले रवीन्द्रनाथ ने ईश्वर को पाया तो माध्यम प्रकृति बनी। प्रकृति के अनेक उपादानों को वे परमात्मा प्रदत्त उपहार मान कर उनसे झोली भर लेते हैं। 'वसंत' शीर्षक कविता में कविगुरू ने वसंत-ऋतु के आगमन और उसकी आभा का अनुपम चित्रण किया है। इसमें वसंत एक नारी रूप में चित्रित हुई है जो पीताम्बर पहनकर मानव के हृदय द्वार पर खड़ी है –

**''आकस्मात दाड़डाईल मानवेर कुटिर प्रांगणे पीताम्बर परि**
**उतना उतरी हाते उड़ाईया उन्माद पवने मन्दारमंजरि।''[28]**
**( वसंत, कल्पना काव्य संग्रह में )**

इस प्रकार समस्त जड़-चेतन में मानवीय भावों का अनुभव करते हुए रवीन्द्र ने प्रकृति को भावनाओं के उद्दीपन का केन्द्र-स्थल माना हैं। यह उद्दीपन केवल बाह्य स्वरूप के प्रति नहीं बल्कि आंतरिक चेतना का प्रकाश है।

**<u>मानवीय रूप –</u>** रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने विश्व प्रकृति के साथ मानव-प्रकृति का मेल अनुभव किया था। उन्होंने अपनी पुस्तक 'साधना' में लिखा हैं कि, भारतीय ऋषियों ने प्रकृति के साथ अपना अंतरंग संबंध स्थापित किया था। प्रकृति उनके लिए मात्र भौतिक सुख प्राप्त करने का साधन नहीं थी। उन्होंने प्रकृति को जड़ नहीं अपितु प्राणवान माना। तभी प्रकृति और मानव में सामंजस्य दिखाई पड़ता हैं और दोनों के मन प्राण एक लगते हैं।

प्रकृति पर चेतन व्यक्तित्व का आरोप ही मानवीकरण है। वस्तुतः यह मानवीय भावनाओं की पृष्ठभूमि का आधार-स्तम्भ हैं। चूँकि साहित्य का मुख्य विषय मानव ही रहा है। लेकिन प्रकृति के सहयोग के बिना मानव की चेष्टाओं और उसकी मनोदशाओं की अभिव्यक्ति भावविहीन और नीरस-सी प्रतीत होती है। प्रकृति की गोद में मानव, सुख का अनुभव करता है और साहचर्य-जन्म मोह का स्वाभाविक रूप से उसके हृदय में प्रादुर्भाव हो जाता है।

रवीन्द्रनाथ के प्रकृति प्रेम पर समालोचक मोहित चन्द्र सेन ने लिखा हैं - ''रवीन्द्रनाथ के काव्य का प्रधान वैशिष्ट्य प्रकृति के प्रति उनका असीम अनुराग, प्रकृति के सौंदर्य में अपने आपको खो देने का भाव, प्रकृति के मूल में वर्तमान विराट रहस्य की निविड़तम अनुभूति है। प्रकृति उनके निकट जड़ नहीं है। मनुष्य में भी इसी चैतन्य का एक प्रकाश है। यही कारण है कि मनुष्य प्रकृति में अपने को ही पा कर इतना आनन्द प्राप्त करता है।''[29]

कविगुरू रवीन्द्र के काव्य में प्रकृति एक चेतन पात्र है। उसके विविध रूपों का सौन्दर्य उनके काव्य में मिलता है। उनकी अरुपानुभूति और सौन्दर्य व्याकुलता प्रकृति के माध्यम से व्यक्त हुई है। अपनी प्रभात संगीत कविता में कवि अरूण रथ चूड़ा पर बैठकर आकाश में विहार करना चाहता है। दिगन्तव्यापी आलोक के साथ वह भी फैल जाना चाहता है। इस दिगन्तव्यापी आलोक में कवि की चेतना उद्बुद्ध होकर एक आकर्षणीय प्रेम की सृष्टि करती है। वह इस धरा से जाना नहीं चाहता, पुष्पित काव्यों में, सुन्दर भुवन में सदा रहना चाहता है। इस संदर्भ में प्रवासजीवन चौधरी कहते हैं कि ''विश्व प्रकृति तथा जीवन को जब निःस्वार्थ दृष्टि से देखा जाता है वह उसकी समग्रता तथा उसका सामंजस्य अन्तर को एक महान सौन्दर्य तथा आनंद से परिपूर्ण कर देता है। यह सौन्दर्य अनुभूति ही काव्य-सौन्दर्य की भित्ति है।''[30] कवि गुरू रवीन्द्र ने अपनी तटस्थ दृष्टि से विश्व प्रकृति तथा जीवन देवता को अनुभव करते हुए सौन्दर्य एवं आनंद की उपलब्धि की और यही उनके रहस्यात्मक भावों के रसास्वादन का माध्यम बना। उन्होंने प्रकृति को दो रूपों में स्वीकार किया – (i) प्रकृति को सजीव सत्ता के रूप में स्वीकारते हुए उसके साथ मानवीयता का संबंध स्थापित किया।

(ii) प्रकृति को ब्रह्म के लीलाकेन्द्र के रूप में देखते हुए उसके साथ आध्यात्मिक संबंध स्थापित किया।

कविगुरू रवीन्द्र ने विश्व-प्रकृति के श्रृंगारभाव का चित्रांकन किया एवं साथ ही उसके कोमल सौन्दर्य की जितनी विभूतियाँ हैं, उन्हें बड़ी निपुर्णता के साथ प्रस्फुट कर दिखाया हैं। प्रकृति का पर्यवेक्षक करने वाला ही कवि नहीं हो जाता बल्कि भावों को सठीक व्यंजना शक्ति का प्रयोग करना एक कवि का परम कर्त्तव्य है। इस दृष्टि से कविवर रवीन्द्र ने प्रकृति में चेतनता का आरोप करते हुए जीवन देवता को काव्य में प्रतिष्ठित किया हैं। मानव-जीवन के सौन्दर्य को प्राकृतिक परिवेश के अन्तर्गत देखा है। प्रकृति पर मानवीय सत्ता का आरोप करते हुए उनकी कल्पना में संध्या बेला एक नारी के रूप में चित्रित है। रवीन्द्र रचनावली के प्रथम खण्ड में संकलित संध्या संगीत काव्य-संग्रह की प्रथम कविता से उदाहरण दृष्टव्य हैं –

**''अयि सन्ध्ये**
**अनंत आकाशतले बसि एकाकिनी,**
**केश एलाइया**
**मृदु मृदु ओ की कथा कहिए आपन मने**
**गाने गेये गेये,**
**निखिलेर मुखपाने चेये।**
**प्रतिदिन शुनियाछि, आजओ तोर कथा**
**नारिनु बुझिते**
**प्रतिदिन शुनियाचि, आज ओ तोर गान**
**नारिनु शिखिते।''**[31]

**(संध्या संगीत काव्य संग्रह में गीत संख्या-1)**

यहाँ 'संध्या' एक सुन्दर नायिका के रूप में मानवीकृत है, जो अनंत आकाश तले अकेले बैठकर अपने केशों को फैलाकर, गीत गाते हुए समस्त भुवन की ओर देखकर धीरे-धीरे अपने मन में ही बातें कर रही है। कवि उस एकाकिनी को

संबोधित करता हुआ उसकी अपूर्व, रूप-भंगिमा, उसकी अस्फुट वाणी और अखिल गान को समझ न पाने के रहस्य की ओर ध्यानाकर्षण करते हैं।

कवि रवीन्द्र के कुछ चित्रों में प्रकृति और नारी के रूप घुल मिल गये हैं। 'मानस सुन्दरी', 'रात्रे ओ प्रभाते', 'विजयिनी' में प्रकृति के मृदुल रूप ही खींचे गये है। उन्होंने जीवन के हर क्षण को महसूस करते हुए काव्य-साधना की है और यही कारण है कि उनकी व्याकुलता अपने जीवन देवता से मिलने के लिए प्रयत्नशील है। कवि ने विश्व प्रकृति के मध्य उस परम तत्व के रहस्य को जानने और समझने का प्रयास किया, इसलिए उन्होंने प्रकृति के मध्य अपने प्रियतम की खोज की हैं । 'बलाका' काव्य संग्रह के 'छवि' कविता में इस उदाहरण को देखा जा सकता हैं –

**''मोर चक्षे ए निखिले,**
**दिके दिके तुमिइ लिखिले**
**रूपेर तुलिका धरि रसेर मुरति।**
**से प्रभाते तुमिइ तो छिले,**
**एक विश्वेर वाणी मूर्तिमती।''**[32]

(छवि, बलाका काव्य संग्रह में )

कविगुरू रवीन्द्र ने 'प्रकृतिर प्रति' शीर्षक कविता में प्रकृति के रूप-वैचित्र्य को देखकर उसे सम्बोधन करते हुए कहा हैं –

**''जत तुई दूरे जास**
**तत प्राणे लागे फाँस,**
**जत तोरे नाहि बूझि**
**तत भालोवासि।''**[33]

**( प्रकृतिर प्रति, मानसी काव्य संग्रह में )**

कवि कहते हैं, जितना ही तुम मुझसे दूर जाती हो उतना ही प्राणों में गाँठ बनती जाती है। जितना ही मैं तुम्हें नहीं समझ पाता हूँ , उतना ही मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। कवि की मानवीय संवेदना में प्रकृति की रूप-रेखा एवं गहन अनुभूति में निहित है, जिसके आधार पर वे जीवन के रहस्य को समझने का प्रयत्न करते है।

अतः प्रकृति के मानवी रूप के अन्तर्गत कविगुरू रवीन्द्र के मानवीय और रहस्यात्मक भावों का प्रकाशन हुआ हैं। इन भावों में समस्त प्रकृति सजीव मानवीय रूप में विचरण करती हुई चित्रित की गई है।

**<u>संवेदनात्मक रूप –</u>** प्रकृति और मानव का भाव-जगत के साथ चिर-साहचर्य रहा हैं। प्रकृति में ऐसी स्वाभाविक शक्ति है, जो हमारे भावों में नवीनता का संचार करती हैं। गंभीर मेघ-गर्जन, मनुष्य को भयभीत करता है और उसकी ही इन्द्र-धनुषी छटा आनंद विभोर कर देती है। जीवन के सुख-दुःख, उत्थान-पतन, आनंद-उल्लास की परिवर्तनशीलता में प्रकृति मनुष्य की सहायिका है। भक्तिकाल में सूर ने अपने उपास्य श्रीकृष्ण के सौन्दर्य को व्यक्त करने के लिए उपमान रूप में प्रकृति का प्रयोग किया तो तुलसीदास ने प्रकृति में उपदेश और ज्ञान का अनुसंधान किया। रीतिकाल के कवियों ने श्रृंगार रस की तृप्ति के लिए प्राकृतिक उपादानों का सहारा लिया। आधुनिक काल में प्रकृति के उपासक रूप में प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी आदि कवियों ने मानवीय भावों का आरोपण किया। यहाँ प्रकृति कभी देवी के चरणों में अर्पित की गयी तो कहीं प्रेयसी के रूप-सौन्दर्य के रस को पान करने का माध्यम बनी।

कविगुरू रवीन्द्रनाथ के समस्त काव्य-रचनाओं के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्रकृति का मानवीय और संवेदनात्मक रूप के आधार पर उनकी चेतना इतने व्यापक स्तर पर विस्तारित हुई हैं और उस चेतना में समस्त विश्व-प्रकृति को एक नीड़ में समेट कर एकत्व की स्थापना का स्वर

गूँज उठा है और साथ ही उस परमात्मा का आभास भी। 'सोनार तरी' काव्य संग्रह की 'वसुंधरा' कविता में कवि कहते हैं –

**''जीवन रस की घटा संचरित होती है,**
**कुसुम-कलियाँ सुहावने वृंतों पर**
**कैसे मुग्ध आनंद से भरकर**
**खिलने के लिए आकुल हो उठती हैं,**
**किस रहस्यमयी पुलक में भरकर।''[34]**

(वसुंधरा, सोनार तरी काव्य संग्रह में)

कविगुरू रवीन्द्र के हृदय में सम्पूर्ण प्रकृति के बीच उसी रहस्यमई चेतना का आभास होता हैं जिसने उनके हृदय में आनंद का संचार कर दिया । उन्होंने स्वयं कहा है - ''प्रकृति ताहार रूप-रस-वर्ण-गंध लईया, मानुष ताहार बुद्धि-मन-स्नेह-प्रेम लईया आमाके मुग्ध करियाछे।''[35] रवीन्द्रनाथ ने पूर्ण आंतरिकता तथा भावावेश के साथ इस विश्व प्रकृति को प्यार किया। दिन-रात, बदलती ऋतुओं का कोई ऐसा प्रहर नहीं जिसने उनके काव्य में स्थान न पाया हो। उनकी अनेक कविताओं में मानवीय संवेदनाओं के साथ प्रकृति की सहज सहचारिता परिलक्षित होती दिखाई पड़ती हैं । 'कल्पना' में संकलित 'वर्षा मंगल' कविता में उदाहरण दृष्टव्य हैं –

**''स्निग्ध सजल मेघ कृष्ण दिवस में**
**बेसुध प्रहर-ठहरा सा अलसाये अनुराग से**
**शशिताराहीना अंधतामसी यामिनी –**
**कहाँ री तू सब पुरकामिनी कहाँ री!''[36]**

**(वर्षा मंगल, कल्पना काव्य संग्रह में)**

रवीन्द्रनाथ के संपूर्ण साहित्य में प्रकृति के प्रति और इसके रहस्य को जानने समझने के प्रति विचित्र सा आकर्षण दिखाई पड़ता है। उन्होंने न केवल प्रकृति

के बाहरी सौंदर्य को चित्रित किया अपितु अपनी अन्तर्दृष्टि के द्वारा उसके आंतरिक सौन्दर्य जो रहस्यमय चेतना से जुड़ा हुआ है उसे भी आत्मीयता से अनुभव किया। अतः विश्वकवि का संवेदनशील हृदय प्रकृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म-कम्पन से स्पन्दित दिखाई पड़ता है।

**<u>अलौकिक सत्ता का स्वरूप –</u>** विश्व की संपूर्ण प्रकृति से प्रेम करने वाले रवीन्द्रनाथ ने ईश्वर के रूप और परम सत्ता के साथ मिलन का अनुभव किया तो माध्यम बनी प्रकृति। उन्होंने शरत, वसंत, संध्या, प्रभात, दिवस रात्रि में उस अलौकिक सत्ता के स्वरूप का दर्शन किया। हवा से सरसराती हुई पत्तियाँ, वेग से बहती नदियाँ, तारों से भरी रात्रि, खिले हुए फूल और दिवस को तपाने वाला ताप-प्रकृति के इन सारे उपादानों में कवि रवीन्द्र ने ईश्वर की विद्यमानता को स्वीकार किया। वे मानते हैं ईश्वरीय शक्ति इनमें स्पंदित होती हैं। 'चैताली' में संकलित 'तत्त्व-ज्ञानहीन' कविता में कवि आँख मूँदकर संपूर्ण विश्व के तत्वज्ञान को प्राप्त कर तृप्तिहीन नयनों से दिन के आलोक में विश्व-प्रकृति को देख लेना चाहते है। उदाहरण अवलोकनीय है –

**''जिसकी हो इच्छा आँख मूँदकर करने बैठो ध्यान**
**विश्व सत्य है या कि मिथ्या, प्राप्त कर लो वह तत्वज्ञान**
**मैं तब तक देखता रहूँ तृप्तिहीन नयनों से**
**विश्व को जी भर कर दिन के आलोक में।''**[37]

**(तत्त्व ज्ञानहीन , चैताली काव्य संग्रह में संकलित)**

कवि रवीन्द्र को गोधूलि की दहलीज पर प्रियतम के रूप में परमतत्व के दर्शन होते हैं –

**''तुम प्रभात की तारिका**
**अपना परिचय बदलकर**
**कभी तो तुम दर्शन देती हो**

**गोधूलि की दहलीज पर।''[38]**

**(तुमि प्रभातेर शुक्रतारा, शेष सप्तक काव्य संग्रह में)**

अतः कवि रवीन्द्र प्रकृति के माध्यम से ईश्वरीय अनुभूति को अनुभव करते है। वे प्रकृति के कण-कण में उस अलौकिक सत्ता के स्वरूप को स्वीकारते हैं।

## प्रकृति संबंधी रहस्यवाद : महादेवी वर्मा और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ।

---

**<u>तुलनात्मक निष्कर्ष</u>** : मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है और मानव प्रकृति का एक अंग। 'प्रकृति' मानव की चिर सहचरी है और उसका यह साहचर्य प्रेम का प्रतीकात्मक रूप है। अध्यात्म दर्शन और भौतिकवाद दोनों ही दृष्टियों से प्रकृति का मानव से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा हैं। ब्रह्म के तीन तत्त्व-सत्, चित् और आनन्द में से सत् तत्त्व प्रकृति और मनुष्य दोनों में विद्यमान हैं। चेतन सृष्टि का विकास प्राकृतिक जड़ जगत् से हुआ। अतः सभी दृष्टियों से मानव का प्रकृति से सनातन संबंध है।

प्रकृति के प्रति महादेवी और कविगुरू रवीन्द्र का बचपन से ही आकर्षण रहा हैं । अद्वैतभाव , सर्ववादी बोध और आध्यात्मिक अनुभूति दोनों का प्रभाव इनके प्रकृति दर्शन पर दिखाई पड़ता हैं। रहस्यानुभूति अद्वैतवादी और सर्ववादी विचारों की ही भावात्मक अनुभूति है। आत्मा और परमात्मा की अद्वैतता एवं ब्रह्म की सार्वभौमिक सत्ता का विचार जब मस्तिष्क के स्तर से उतर कर हृदय की अनुभूति बन जाता है तो इसे रहस्यानुभूति कहते हैं। अतः रहस्यानुभूति ने महादेवी और रवीन्द्रनाथ के प्रकृति प्रेम को भावात्मकता, कोमलता और आर्द्रता प्रदान की। अद्वैतभाव से महादेवी और कविगुरू रवीन्द्र दोनों ने प्रकृति के प्रति सहोदर भाव का बोध प्राप्त किया। उन्होंने स्वीकारा कि, जड़ सृष्टि या प्रकृति भी मानव की तरह ब्रह्म की ही सृष्टि हैं । प्रकृति के रहस्यात्मक रूप के अन्तर्गत चार अवस्थाएँ हैं –

1. जिज्ञासा
2. आस्था
3. विरह
4. अद्वैत भावना

पहली अवस्था में प्रकृति में अव्यक्त सत्ता का आभास होने पर परमात्मा के अस्तित्व के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होता है। उस अलौकिक सत्ता को जानने की गहरी ललक महादेवी और कविगुरू रवीन्द्र के प्रकृति संबंधी रहस्यवादी कविताओं में उपलब्ध हैं । कतिपय उदाहरण देखे जा सकते हैं –

**<u>महादेवी –</u>**

(i) **''तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है''**[39]

(सांध्यगीत, गीत संख्या - 26 )

(ii) **''आज क्षितिज पर जाँच रहा है तूली कौन चितेरा?''**[40]

( संध्यगीत , गीत संख्या - 37 )

(iii) **''जाने किसकी छवि रूम -झूम,**
**जाती मेघों को चूम-चूम।''**[41]

(नीरजा , गीत संख्या - 29 )

**<u>रवीन्द्रनाथ –</u>**

(i) **''आमि खुजि कारे अन्तरे मने,**
**गन्धविधूर समीरणे।''**[42] (गीतांजलि, गीत संख्या - 54 )

(ii) **''चित्त आमार हाराल आज**
**मेघेर माझरखाने,**
**कोथाए छुटे चलेछे से**
**कोथाए के जाने।''**[43] (गीतांजलि , गीत संख्या - 70 )

रहस्यानुभूति की विशिष्ट अवस्था, परमसत्ता या आलौकिक प्रियतम में अटल आस्था की है। इसकी अभिव्यक्ति महादेवी और कवि रवीन्द्र की प्रकृति संबंधी रहस्यावादी कविताओं में पूर्ण गंभीरता के साथ हुई हैं । उदाहरण दृष्टव्य हैं –

**<u>महादेवी –</u>**

**''तम ही तुम हो और विश्व में**
**मेरा चिर परिचित सूनापन,**
**मेरी छाया हो मुझमें लय**
**छाया में संसृति का स्पंदन,**
**मैं पाऊँ सौरभ सा जीवन**
**तेरी निश्वासों में घुल मिल।''[44]**

(नीरजा , गीत संख्या - 27 )

रवीन्द्रनाथ –

**''जदि तोमाए भालोवासि,**
**आपनि वेजे उठवे बाँशि,**
**आपनि फुटे उठवे कुसूम,**
**कानन भरे।''[45]**

(गीतांजलि , गीत संख्या - 73 )

आस्था की अगली स्थिति विरह की अवस्था है। प्रकृति के रहस्यात्मक रूप के अन्तर्गत विरह की अवस्था का प्रत्यक्ष-दर्शन महादेवी एवं कवि रवीन्द्र की कविताओं में मिलता हैं । असीम या अलौकिक प्रियतम से मिलने की उत्कण्ठा जब अनियंत्रित गति से बढ़ने लगती है तब प्रकृति के समस्त-उपादान विरह-व्यथा को बढ़ाने में सहायक बन जाते है। कतिपय उदाहरण अवलोकनीय है –

**<u>महादेवी –</u>**

**''घुमड़ घिर क्यों रोते नव मेघ**
**रात बरसा जाती क्यों ओस,**
**पिघल क्यों हिम का उर अवदात**

**भरा करता सरिता के कोष।''[46]**

(रश्मि , गीत संख्या - 31 )

**<u>रवीन्द्रनाथ –</u>**

**''चारों ओर अविश्रांत गति से वृष्टि पड़ रही है।**
**निर्जन रात्री अंधकार को सघन बनाती आ रही है।**
**वायु, असीम की खोज में, क्रंदन करती हुई,**
**खुले विस्तृत मैदान के अंतिम छोर से होकर चल रही है।''[47]**

(मेघदूत , मानसी काव्य संग्रह में )

साधक की साध्य से एकात्मकता की अनुभूति रहस्यानुभूति की मूलाधार है। अतः असीम से मिलन की व्यथा में कवि रवीन्द्र व महादेवी का प्रकृति प्रेम उत्कृष्ट रूप में व्यक्त हुआ है। यहाँ साधक का कोई अलग अस्तित्व नहीं रहता बल्कि वह परमात्मा के दिव्य-आलोक में विलीन होकर एकात्म का बोध करती है। इस दृष्टि से कविगुरू रवीन्द्र कृत 'गीतांजलि' काव्य संग्रह की कविताएँ रहस्यभाव के आधार पर रचित हैं। कवि इसमें प्रकृति के बीच पेड़-पौधों के पत्तों पर पड़ने वाले स्वर्णवर्ण के प्रकाश में उस असीम के प्रेम को देखते है। कवि उस असीम के साथ संयुक्त होकर उसके प्रेम को अपने हृदय में पाते है –

**''एहे तो तोमार प्रेम ओगो**
**हृदयहरण।**
**एहे जे पाताए आलो नाचे**
**सोनार वरण।**
**X X X**
**प्रभात आलोर धाराए आमार**
**नयन भेसेछे।**
**एहे तोमारि प्रेमेर वाणी**
**प्राणे ऐसेछे।''[48]**

(गीतांजलि , गीत संख्या - 30 )

यह भाव-रहस्य की चरम सीमा है जहाँ रहस्यवादी साधक परम-सत्ता से अद्वैत की अनुभूति करता है। दूसरी ओर कवयित्री महादेवी ज्यों-ज्यों रहस्य पथ

पर अग्रसर होती जाती हैं त्यों-त्यों उनकी अद्वैत भावना भी गंभीरतर होती जाती हैं । अतः महादेवी की प्रारम्भिक रचनाओं में अद्वैत के साथ द्वैत भाव भी परिलक्षित होता है वही 'नीरजा' तक आते-आते वह प्रत्येक स्थिति में अपने अलौकिक प्रियतम से अभिन्न अनुभव करती हैं। उदाहरण दृष्टव्य हैं –

**''बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।**
**नींद थी मेरी अचल निस्पंदन कण कण में,**
**प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पन्दन में.**
**प्रलय में मेरा पता पदचिन्ह जीवन में,**
**शाप हूँ जो बन गया वरदान बंधन में।''[49]**

( नीरजा, गीत संख्या - 10 )

इस प्रकार जीवन के बीच अनंत का अनुभव करना ही महादेवी और कविगुरू रवीन्द्र का प्रकृति-प्रेम है।

प्रकृति संबंधी रहस्यवादी कविताओं में ऋतु-चित्रण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महादेवी और रवीन्द्रनाथ दोनों ने अपने ऋतु-चित्रण में वसन्त और वर्षा का वर्णन किया हैं । जिसके कुछ उदाहरण उल्लेखनीय हैं–

**<u>महादेवी –</u>**

**(i) ''पतझर बन जग में कर जाता**
**नव बसंत संचार।''[50] (रश्मि , गीत संख्या - 29 )**

**(ii) ''घुमड़ घिर क्यों रोते नव मेघ,**
**रात बरसा जाती क्यों ओस**
**पिघल क्यों हिम का उर अवदात,**
**भरा करता सरिता के कोष।''[51] (रश्मि, गीत संख्या-31)**

**<u>रवीन्द्रनाथ –</u>**

**(i) ''तोमार कुसुमगुलि, हे वसन्त, से गुप्त संवाद,**
**निये गेलो कोथा।''[52]**

( वसंत , कल्पना काव्य संग्रह में )

**(ii) ''ऐमन दिने तारे बला जाए**
**ऐमन घनघोर बरिसाए।''[53]**
**(वर्षार दिने , मानसी काव्य संग्रह में )**

महादेवी की तुलना में रवीन्द्रनाथ में ऋतु-चित्रण अधिक समृद्ध रहा हैं । रवीन्द्र के ऋतु चित्रण में वसन्त और वर्षा के अलावे ग्रीष्म, शरद, हेमंत, शिशिर ऋतु का वर्णन भी अधिक मोहक बन पड़े हैं।

**निष्कर्ष :** इस प्रकार हम देखते हैं कि महादेवी और रवीन्द्रनाथ की प्रकृति-चेतना समग्र मानवीय भावनाओं का उद्दीप्त रूप हैं । यहाँ प्रकृति किसी शास्त्रबद्ध नियमों के अन्तर्गत आबद्ध नहीं है बल्कि 'प्रकृति' मानवीय जीवन का एक अभिन्न अंग है, जो मनुष्य के सुख, दुख, आनंद उमंग आदि सभी भावों के साथ समान रूप से चलती है। इनके काव्य में प्रकृति के जिस रहस्यभाव को चित्रित किया गया है वह आत्मा के साथ परमात्मा के घनिष्ठ सम्पर्क को स्थापित करता है। कवि रवीन्द्र की दृष्टि में जहाँ उस असीम के आनंद की अनुभूति प्रकृति का सौन्दर्य संयोग है वहाँ महादेवी में सत्य के प्रति जो अनुराग, मानवता के प्रति जो स्नेह एवं समन्वय के प्रति जो आकर्षण है, वह इनके प्रकृति-चित्रण में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता हैं। महादेवी और रवीन्द्रनाथ दोनों ने प्रकृति के रहस्यात्मक चित्रण में आलंबन, उद्दीपन, मानवीकरण तथा संवेदनात्मकता पर अधिक बल दिया हैं । दोनों ने प्रकृति चित्रण में बाह्य रूप की अपेक्षा आंतरिक सत्य को अधिक महत्व दिया। दोनों के लिए प्रकृति-चित्रण साध्य कम, साधन अधिक हैं अर्थात् महादेवी और रवीन्द्रनात ने प्रकृति-चित्रण शुद्ध प्रकृति-चित्रण के लिए कम और भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में अधिक किया है। दोनों ने ही प्रकृति के स्थिर एवं जड़ रूप की अपेक्षा उसके चेतन रूप के अंकन में अधिक रूचि प्रदर्शित की हैं । दोनों ने प्रकृति चित्रण में उस अलौकिक सत्ता के प्रति जिज्ञासा भाव और प्रकृति में उस असीम रूपी प्रियतम के दर्शन किये हैं | इस दृष्टि से भारतीय साहित्य की प्रकृति-चित्रण की परम्परा में भी महादेवी और रवीन्द्रनाथ का विशिष्ट दृष्टिकोण एवं महत्वपूर्ण स्थान स्वीकार किया जा सकता है।

## सन्दर्भ - ग्रन्थ - सूची -


1. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, अनुपम प्रकाशन, पटना -4, संस्करण - 2011, पृ0 - 31
2. महादेवी साहित्य (खण्ड - 1), सं. - निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण - 2007, पृ0 - 432
3. वही, पृ0 - 423
4. वही, पृ0 - 102
5. वही, पृ0 - 168
6. वही, पृ0 - 276
7. काव्य के तत्त्व, देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016, पृ0 - 27
8. महादेवी साहित्य (खण्ड - 1), सं. - निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण - 2007, पृ0 - 29
9. वही, पृ0 - 294
10. वही, पृ0 - 228
11. हिंदी काव्य में प्रकृति चित्रण, किरण कुमारी गुप्ता, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण - 2006, पृ0 - 17
12. महादेवी साहित्य, खण्ड-एक, सं0-निर्मला जैन, पृ0-113 (रश्मि)
13. वही, पृ0-178
14. वही, पृ0-172
15. वही, पृ0-139
16. वही, पृ0-169
17. वही, पृ0-276
18. वही, पृ0-192
19. वही, पृ0-423

20. वही, पृ0-271
21. वही, पृ0-389
22. वही, पृ0-182
23. गाँधी, नेहरू, टैगोर एवं अंबेडकर चिंतन, डॉ0 मधु वार्ष्णेय तथा अन्य , एच.जी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली,1998 , पृ0-260
24. संचयिता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम वभाग, कोलकाता, पृ0-208
25. संचयिता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शुभम प्रकाशन, कोलकाता, तृतीय संस्करण-2011, पृ0-39
26. वही, पृ0-108
27. रवीन्द्र रचनावली, खण्ड-6, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, बंगाब्द-1421, पृ0-43
28. संचयिता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शुभम प्रकाशन, कोलकाता, तृतीय संस्करण-2011, पृ0-231
29. बहुआयामिता के पर्याय : रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ0 आशा अनेजा, प्रकाशक-आशा बुक्स, दिल्ली, संस्करण-2016, पृ0-174
30. रवीन्द्रनाथेर सौन्दर्य दर्शन, प्रबासजीवन चौधरी, ए0 मुखर्जी एण्ड को0 लि0, कोलकाता, बंगाब्द प्रथम संस्करण-1363, पृ0-140
31. रवीन्द्र रचनावली, प्रथम खण्ड, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, संस्करण-1420(बंगाब्द), पृ0-7
32. संचयिता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शुभम प्रकाशन, कोलकाता, तृतीय संस्करण-2011, पृ0-393
33. मानसी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, 1418 बंगाब्द (पुनर्मुद्रण), पृ0-59

34. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, कविता भाग-1, प्रधान सं0-इन्द्रनाथ चौधुरी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013, पृ0-154
35. रवि रश्मि, चारूचन्द्र बन्ध्योपाध्याय, समीरण चौधरी, कॉलेज स्ट्रीट पब्लिकेशन प्रा0 लि0 कोलकाता, प्रथम संस्करण-1417 (बंगाब्द), पृ0-152
36. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, कविता भाग-1, प्रधान सं0-इन्द्रनाथ चौधुरी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013, पृ0-250
37. वही, पृ0-242
38. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली , कविता भाग - 3 , पृ0-172
39. महादेवी साहित्य, खण्ड-एक, सं0-निर्मला जैन, पृ0-278
40. वही, पृ0-297
41. वही, पृ0-206
42. रवीन्द्र रचनावली, खण्ड-6, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, बंगाब्द-1421 (पुनर्मुद्रण), पृ0-43
43. वही, पृ0-52
44. महादेवी साहित्य, खण्ड-एक, सं0-निर्मला जैन, पृ0-204
45. रवीन्द्र रचनावली, खण्ड-6, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, बंगाब्द-1421 (पुनर्मुद्रण), पृ0-53
46. महादेवी साहित्य, खण्ड-एक, सं0-निर्मला जैन, पृ0-156
47. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, कविता भाग-1, प्रधान सं0-इन्द्रनाथ चौधुरी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013, पृ0-109
48. रवीन्द्र रचनावली, खण्ड-6, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, बंगाब्द-1421 (पुनर्मुद्रण), पृ0-29-30

49. महादेवी साहित्य, खण्ड-एक, सं0-निर्मला जैन, पृ0-177
50. वहीं, पृ0-150
51. वही, पृ0-156
52. संचयिता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शुभम प्रकाशन, कोलकाता, तृतीय संस्करण-2011, पृ0-232
53. वही, पृ0-60